IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोटा चित्रशैली पर मुस्लिम प्रभाव

नसीम बानो ए शोधार्थी

मौलाना आजाद यूनिवर्सिटीएजोधपुरए राज.

सर्वप्रथम आनंद कुमार स्वामी ने 1916 ई.में अपने ग्रंथ ‘राजपूत पेंटिंगश् में राजस्थान की चित्रकला के स्वरूप को उजागर किया। राजस्थान में आधुनिक चित्रकला को प्रारंभ करने का श्रेय कुंदनलाल मिस्त्री को दिया जाता है। राजस्थान की चित्रकला में अजंता व मुगल शैली का सम्मिश्रण पाया जाता है राजस्थानी चित्रकला को राजपुत्र चित्र शैली भी कहा जाता है राजस्थानी चित्रकला में चटकीले-भड़कीले रंगों का प्रयोग किया गया हैं। इसमें विशेषतया पीले और लाल रंग का सर्वाधिक प्रयोग किया गया है राजस्थानी चित्रकला शैली का प्रारंभ 15वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य माना जाता है।

भारतीय चित्रकला आरंभ में बौद्ध और जैन धर्म से प्रभावित रही। धार्मिक पुस्तकों में प्राप्त चित्रों से जैन चित्र शैली की विशिष्ठताएं ज्ञात होती हैं। कालान्तर में यह शैली सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित रही और अलग-अलग प्रांतों में इन्हें विभिन्न नामों यथा - गुजरातीए अपभं्रशए मध्यभारतीय आदि नामों से संज्ञापित किया गया। गुजरात और राजस्थान की सीमाओं की निकटता के फलस्वरूप यह समस्त स्थानों पर प्रचलित रही। गुजरात शैली से प्रभावित शैलियों ने अपनी विशेषताएं समायोजित कर अपना पृथक अस्तित्व स्थापित किया। इनमें मुख्य रूप से - मेवाड़ शैली- उदयपुरए नाथद्वाराए चावण्डए देवगढ़

मारवाड़ी शैली- जोधपुरए बीकानेरए जैसलमेरए किशनगढए नागौरए अजमेरए

ढूंढाड़ शैली- आमेरए जयपुरए शेखावाटीए अलवरए करौली।

हाडोती शैली- बूंदीए कोटाए झालावाड़ए दुगारी आदि शैलियां विकसित हुईं।

मुगल शैली मुख्य रूप से चित्रण और व्यक्तिगत लघुचित्रों के उत्पादन तक ही सीमित थी जो मुगल सम्राटों (16 वीं -18 वीं शताब्दी) के शासनकाल के दौरान भारत में विकसित हुई। आरंभिक चरणों में इसने फारसी चित्रकला गुण अपनाएं किन्तु कालान्तर में फारसी शैली से भिन्न शैली का प्रादुर्भाव हुआ।

मुगल शैली की विशेषताएं

सामान्य रूप से मुगल शैली ने काफी हद तक यथार्थवादी चित्रण की एक विशेषता बनाईए और वह पश्चिम से प्रभावित थेए जो मुगल दरबार में उपलब्ध थे। यह कभी भी फारसी लघु या पहले की भारतीय चित्रकला की विशेषता नहीं थी । पोट्रेट्स में शायद ही कभी अलगए मुद्राए सख्त सिर थाए लेकिन शरीर के बाकी आधे हिस्से ने धान आकृष्ट किया। लंबे समय तक पोट्रेट्स हमेशा पुरुषों के ही बनाए जाते थेए अक्सर महिला दासों या उपपत्नी के साथ होते थे लेकिन चित्रांकन में महिला दरबार के बारे में विद्वानों के विचारों में एकात्म्य दिखलाई नहीं देता है। कुछ विद्वानों का दावा है कि जहाँआरा बेगम और मुमताज महल जैसी विभूतियों की कोई ज्ञात समानता नहीं हैए और अन्य लोग इन प्रसिद्ध महानुभावों के लिए दारा शिकोह या पोर्ट्रेट से उदाहरण के लिए लघुचित्र प्रस्तुत करते हैं ।

शासक का चित्र भारतीय लघु चित्रकला में एक प्रमुख विषय के रूप में दृढ़ता से स्थापित हो गयाए जिसे मुस्लिम और हिंदू दोनों को बढ़ाना था। 17 वीं शताब्दी के अश्वारोही चित्रों सेए ज्यादातर शासकए पश्चिम से एक और लोकप्रिय बन गए।एक अन्य नए प्रकार की छवि ने झरोखा दर्शन (शाब्दिक रूप से ''बालकनी का दृश्य पूजा''द्धए या दरबारए या जनता के लिए सम्राट का सार्वजनिक प्रदर्शन दिखायाए जो पहले अकबरए जहाँगीर और शाहजहाँ के अधीन एक दैनिक समारोह बन गया था। इन दृश्यों मेंए सम्राट को बालकनी या खिड़की पर शीर्ष पर दिखाया जाता हैए नीचे दरबारियों की भीड़ के साथए चित्रित किया गया। देवताओं की भांति प्रभामंडल इन सम्राटों एकल चित्र में दिए गए थेए यह इस धारणा को स्पष्ट करता है कि मुगलों की आकांक्षा थी कि वह पृथ्वी पर अल्लाह के प्रतिनिधि के रूप में या खुद को अर्ध-ईश्वरीय दर्जा देने के रूप में एक छवि प्रस्तुत कर सकते हैं। अन्य छवियों में सम्राट सम्राट की बैठकेंए आगंतुकों का आनाए दरबार ए औपचारिक परिषद में दिखाया गया है । शिकार के दृश्यों में शामिल शाही चित्र बाद की राजपूती चित्रकला और अन्य मुगल शैलियों में अत्यधिक लोकप्रिय हुए। मुगल दरबार चित्रकला क्षेत्रीय दरबारों और नगरों में निर्मित मुगल शैली के विपरीत है। क्षेत्रीय चित्रकला की स्वदेशी गैर-मुस्लिम परंपराओं से अलग है। हिंदू और जैनए बौद्ध चित्र पूरी तरह से धार्मिक थे। वे मुख्य रूप से ग्रंथों के अपेक्षाकृत छोटे चित्रों में मौजूद थेए लेकिन भित्ति चित्रोंए और कपड़े पर लोक शैलियों में चित्रकारीए विशेष रूप से लोगों पर लोकप्रिय गायकों या हिंदू महाकाव्यों और अन्य कहानियों के गायकों को प्रदर्शित करने के लिए चित्रित किए गए। इसके विपरीत मुगल चित्रकला ''लगभग पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष'' थी। हालांकि धार्मिक चित्र भी कभी-

कभी चित्रित किए जाते थे। यथार्थवाद ए विशेष रूप से व्यक्ति और जानवरों के चित्रों मेंए एक प्रमुख उद्देश्य बन गया।

17 वीं और 18 वीं शताब्दी में राजस्थान और मध्य भारत में चित्रकला की नई विधा का आरंभ हुआ। इन चित्रों में से महत्वपूर्ण स्कूल मालवाए मेवाड़ए बूंदी- कोटाए मारवाड़ रहे। इन चित्रों को कपड़े या कागज

पर छोटे पैमाने पर बनाया जाने लगा। कोटा उत्तर भारतीय राज्य राजस्थान का एक शहर है। यह राजस्थान के दक्षिणी भाग में चंबल नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है। दक्षिणी राजस्थान का कोटा 1624 में बूंदी से अलग हुआ था। कोटा चित्रशैली बूंदी चित्रशैली में अत्यधिक साम्यता है। कोटा का शाही महल अपने दीवार चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैए जिसमें कृष्ण लीलाओं का चित्रण है । हाडोती क्षेत्र की कला में भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को झांकी चित्रण के माध्यम से दर्शाया गया है। बूंदी के हाड़ा राजपूत शासकों और कोटा में उनकी संपाश्विक शाखा कला के प्रबुद्ध संरक्षक थे। बूंदी या हाडोती स्कूल ऑफ पेंटिंग राव शत्रुशाल के शासनकाल में आरंभ हुई (1631.1659 ई।) ए जिसे शाहजहाँ ने दिल्ली का गवर्नर नियुक्त किया था। चैहान वंश के शासकों का प्रभाव बूंदीए कोटा क्षेत्रों तक ही सीमित होने के कारण इस क्षेत्र को हाडोती संज्ञापित किया जाता रहा है।

यद्यपि 17 वीं शताब्दी के मध्य में एक विशिष्ट कोटा शैली विकसित हुई थीए लेकिन बूंदी और कोटा चित्रकला के बीच समानताएं कई मामलों में विवरणए वेशभूषा और चेहरों को चमकाने के तरीकों के साथ कई मायनों में जारी रहीं। चट्टानी और कुछ हद तक उस क्षेत्र के जंगल में शिकार करने वाले शेरों और बाघों के साथ अपने शिकार के साथ राजकुमारों का चित्रण करते हुए कोटा के शिकार के दृश्य प्रसिद्ध हैं। कोटा शैली को बूंदी शैली की एक उप शाखा माना जाता है। हाडौती की सीमाएं मेवाड़ और ढूंढार से सटी होने के कारण और उनसे वैवाहिक संबंध होने के कारण वहां की सांस्कृतिक विशेषताओं को कोटा चित्रशैली ने आत्मसात किया। आरंभ के समय में इनका प्रभाव अधिक स्पष्टता से

परिलक्षित होता है किन्तु बाद में यह क्षीण होने लगा। 17वीं शताब्दी के मेवाड़ी चित्रों में धार्मिकता ए दरीखानेए दरबार और श्रृंगार के विषयों को चित्रित किया। मेवाड़ी चित्रकार चटकीले रंगों जैसे केसरियाए पीलेए नीलेए लाल ए हरे ए श्वेत ए काले का प्रयोग अधिक किया करते थे। मेवाड़ी चित्रशैली का प्रभाव बूंदी और कोटा चित्रशैली पर भी दिखाई देता है। बूंदी की चित्रशाला के आंतरिक कक्षों और कोटा गढ़ के चित्रों में आलंकारिक रेखाओं का प्रयोग इन्हीं के फलस्वरूप है। कोटा के चित्रकारों ने मेवाड़ए मुगल और दक्षिण शैली की विशेषताओं को ग्रहण करते हुए अपनी विशेष शैली विकसित की।

जगत सिंह (1658.1684द्ध के शासनकाल के दौरानए जीवंत रंगों और बोल्ड लाइनों को चित्रित करने वाले चित्र बनाए गए थे। अर्जुन सिंह (1720.1723द्ध के शासन मेंए एक शैली उभरी जहां एक पुरुष को लंबी झुकी हुई नाक के साथ चित्रित किया गया था। 18 वीं शताब्दी मेंए कोटा अपने उत्कृष्ट शिकार दृश्योंए रागमालाओं और चित्रों के लिए लोकप्रिय हो गया। राम सिंह द्वितीय (1827.1866द्ध के शासनकाल के दौरान 19 वीं शताब्दी मेंए कोटा चित्रकला को पुनर्जीवित किया गया। उन्होंने पूजाए शिकारए दरबार और जुलूस के दृश्यों को दर्शाते हुए कई चित्रों का चित्रण करवाया। कोटा शैली में बूंदी शैली की कुछ विशेषताएं हैंए लेकिन इसकी अपनी अलग विशेषताएं भी हैं। दमदार शरीरए चमकते चेहरेए उभरी हुई आंखें कोटा शैली की खास विशेषताएं हैं। कोटा शैली की पेंटिंग में हरेए लाल और सुनहरे रंगों का अनुप्रयोग देखने में बहुत अच्छा लगता है। इस शैली में चित्रित जानवरों में हिरणए बाघए शेर और सूअर शामिल हैं। कोटा शैली की पेंटिंग ए जिनमें से कुछ कोटा के महलों की दीवारों पर चित्रित हैंए प्रकृति को उसकी महिमा में दर्शाती हैं।

कोटा चित्रशैली बूंदी शैली के निकट ही प्रतीत होती है। कोटा चित्र शैली में बूंदी व मुगल शैली का समन्वय पाया जाता है कोटा कलम में मुगलिया प्रभाव राव भजगतसिंह" के समय से देखने को मिलता है कोटा चित्र शैली का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने का श्रेय भराव

रामसिंह" को जाता है। कोटा चित्र शैली महाराव भउम्मेद सिंह" के समय अपने चमत्कर्ष पर थी। यहां की मुख्य विशेषता शिकार के दृश्यों का चित्रण रहा है। शासकों के साथ रानियों को भी शिकार करते हुए दिखाया गया है। महाराव रामसिंह (1828द्ध कला प्रेमी थे इनको हाथी व घोड़े की सवारी अधिक प्रिय थी। अतः उनके चित्रों में राजसी वेशभूषा में हाथी व घोड़े पर बैठे हुए चित्रांे का अंकन किया गया है। इनके समय के चित्रों में कुछ विलक्षण चित्र भी प्राप्त होते हैं जैसे हाथी की सूंड पर नारी का नृत्यए छतरी पर हाथी की सवारी आदि। 1857 की क्रान्ति बाद इस कोटा शैली पर कम्पनी की कलम का प्रभाव परिलक्षित होता है। महाराव शत्रुशाल द्वितीय के बाद ये शैली पतनोन्मुख होती गई।

नारी सौंदर्य

इस शैली में नारी का चित्रण अधिक सुंदर मिलता है जैसे सुदीर्घ नासिकाए पतली कमरए उन्नत किन्तु छोटे उरोजए कपोल खिले हुएए मोटी भवेंए बादाम जैसे कटाक्षयुक्त नेत्रए भारी चिबुकए झूलती केशराशि ए सुंदर अलकावली नारी आकृति की जीवंतता प्रदान करती है। मोतियों के जड़े आभूषण विशेष

पुरुष आकृति

पुरूष कद में छोटेए गठीले शरीर वालेए मुख्यतः बृषभ कंधेए उन्नत भौहंे एमोटी आंखें ए गोल मुखए माँसल देहए मुख पर भरी भरी दाढी और मुछेए तलवार कतार आदि हथियारों से युक्त वेशभुषा।

प्रमुख रंग– हल्का हराए पीला व नीला रंग अन्य रंगों की अपेक्षा अधिक प्रयोग हुआ है। यहां हल्के हरे रंगों का प्रयोग छायांकन के लिए हुआ है ।

विषय– कोटा चित्रशैली में मानवीय और प्रकृति संबंधी विषयों का अंकन किया गया है। इनमें मुख्यतया शिकारए पशुयुद्धए दरबारी जीवशैलीए उत्सव–त्योहारए कृष्णलीलाओं ए नारी विषयक आदि का चित्रांकन विशेष रूप से किया गया है। कोटा के चित्रों की एक प्रमुख विशेषता रही है आखेट दृश्य।

हाशिए– कोटा चित्रशैली में लाल व सिन्दूरी रंग के हाशिए बनाए जाते थे और उनके दोनों तरफ महीन काली रेखाएं भी विशेषता थीं।

वास्तु– चित्रों में भवनों को शिखरयुक्त एवं कंगूरेनुमाए विभिन्न ज्यामितीय अलंकरणों और झरोखों से युक्त बनाया गया है। इन पर विभिन्न सुंदर पर्दों का चित्रण भी किया गया है।

प्रमुख कलाकार– रघुनाथए गोविंदरामए डालूए लच्छीरामए नूरमोहम्मद

कोटा भित्तिचित्रण – कोटा के भित्तिचित्रों में प्राकृतिक दृश्यों का अंकन कुशलता से किया गया है। प्रकृति चित्रण में गजए हिरणए बंदरए सूअरए सघन उपवनए सरोवरए रंग–बिरंगे बादलोंए तड़ित आदि को सूक्ष्मता से रेखांकित किया गया है। यहां के चित्रों में कृष्णलीला और आखेट के चित्रों की बहुतायत है। कोटा गढ़ के अर्जुन महलए बड़ामहलए राजमहल और छत्रमहल आदि में आखेट के चित्रों का कुशलता से चित्रण किया गया है। कोटा नरेश के पुष्टि मार्गी होने के कारण यहां कृष्ण लीलाओं और श्रीनाथ की के भित्तिचित्रों का अंकन व्यापक पैमाने पर किया गया है।

पारस्परिक समन्वय

भारतीय कला पर मुगलकालीन प्रभाव अकबर के समय से दृष्टिगत होता है। हांलाकि बाबर द्वारा भी ईरान से कुछ चित्रकार भारत लाए गए थे किन्तु उसकी युद्धों में व्यस्तता के कारण वह इस क्षेत्र में कोई योगदान नहीं दे सका। बाबर का पुत्र हूमायूं भी कलाप्रेमी था किन्तु उसके जीवन में ठहराव नहीं होने के कारण उसका ध्यान भी इस ओर नहीं गया। अकबर एक दूरदर्शी और कुशल प्रशासक था। उसके समय से मुगल–ईरानी शैली का प्रभाव स्थानीय चित्रकारों की कलम पर दिखलाई देता है। अकबर के दरबार में –दसवन्तए गोवर्धनए रामलालए चितरमनए मिसकिनए विचित्र आदि चित्रकार रहे हैं। उसने इन चित्रकारों से चित्रशालाओं का निर्माण करवाया। अकबरकालीन प्रसिद्ध ईरानी चित्रकार– अब्दुल समद शिराजी और मीर सैयद अली उसके समय के प्रसिद्ध चित्रकार रहे हैं। यद्यपि अकबरकालीन चित्रकला ने राजस्थानी शैली को काफी प्रभावित किया क्योंकि उसके दरबार में हिन्दू और ईरानी दोनों ही प्रकार के चित्रकार थे लेकिन भारतीय चित्रकला का स्वर्णिम काल जहांगीर के काल को माना जाता है। जहंागीर एक कलाप्रेमी और कला का संरक्षक था। उसके काल में पशु–पक्षी ए व्यक्तिचित्रणए उत्सव और त्योहारों का चित्रण हुआ है। कहा जाता है कि उसकी कलाप्रियता और पारखी नज़र इतनी अधिक विलक्षण थी कि वह चित्र देखकर चित्रकार का नाम तक बता देता था। जहांगीरकालीन प्रसिद्ध चित्रकार था मन्सूर जो इतना बड़ा चित्रकार था कि किसी भी चित्र की हूबहू नकल कर देता था। मुगल चित्रकला शैली बाद में मुस्लिम और हिंदू और बाद में सिख में प्रचलित हुई और अक्सर हिंदू विषयों को चित्रित करने के लिए उत्तरी भारत में प्रचलित रही। इसने कई क्षेत्रीय शैलियों को भी विकसित किया। इसे ‘‘उत्तर–मुगल‘‘ए ‘‘उप–मुगल‘‘ या ‘‘प्रांतीय मुगल‘‘ के रूप में जाना जाता है। विदेशी फारसी और स्वदेशी भारतीय तत्वों का मिलन विदेशी संस्कृति के अन्य पहलुओं के संरक्षण की एक कड़ी थी जो तुर्क–अफगान दिल्ली सल्तनत द्वारा शुरू की गई थी और इसे विभिन्न एशियाई एशियाई तुर्की राजवंशों द्वारा उपमहाद्वीप में शामिल किया गया था ।

कोटा चित्रशैली में पत्थर और मिट्टी के रंगों का प्रयोग किया जाता था। कोटा गढ़ के भित्तिचित्रों में खनिज और वनस्पति रंगों का ही प्रयोग किया गया है। खनिज के रंग प्रयोग करने से इस पर चूने का लेप करने पर उस पर कोई रासायनिक क्रिया नहीं होती है। रंगों में हिरमिचए हिंगलुए काजलए खड़ियाए रामरजए हराभाटाए नील आदि का प्रयोग किया जाता था। रंग बनाने की तकनीक भी विशेष प्रकार की थी इसमें गाय को आम के पत्तों का चारा खिलाया जाता था उसके गौमूत्र को पीली मिट्टी पर सुखाकर पीला रंग बनाया जाता था। झाला हवेलीए छत्रमहल में विभिन्न प्रकार के शेड्स का प्रयोग किया गया है। इनमें कहीं- कहीं सोने व चांदी के रंग भी प्रयोग किए गए हैं। यह सोने और चांदी के पत्तरों को पानी के साथ गांेद मिलाकर काफी समय तक रगड़ा जाता था तब इनका रंग तैयार होता था। मुगल चित्रकला में प्रयुक्त की गई तकनीक सरल थीए जिसमें कागज पर अपारदर्शी जल रंग प्रयोग किया जाता था। चित्रकार ब्रश या कलम के साथ लागू लकड़ी का कोयला या पतली काली स्याही के साथ रचना करना आरंभ किया।एक पतली जमीन अपारदर्शी जल रंग की एक होती थी यह परत-जो सफेद या रंगा हुआ पीला या नीला होती थी नीचे की ओर चित्र को प्रकट करने के लिए पारभासी थी। विभिन्न रचनाओं के मुख्य क्षेत्रों को परिभाषित करने के लिए विभिन्न रंगों के मैदानों का उपयोग किया जाता था। चित्र को पत्थर की एक चिकनी स्लैब पर रखकर जलाया जाता था। कागज के पीछे एक चिकनी पत्थर के साथ रगड़ा जाता था। यह प्रक्रिया बार-बार दोहराने से पेंटिंग की सतह चिकनी हो जाती थी।

मुगल काल में दो प्रकार का कागज प्रयुक्त होता था। एक पतलेए चिकनेए सफेद कागज जो ऑफ-व्हाइट पेपर पल्प से तैयार होता था। दूसरा एक मोटा बफर पेपरए रेशेदारए भूराए नॉनफॉर्मर पेपर पल्प से बनाया होता था। जलाने के कारण धब्बे बन जाते थे। बड़े चित्रों के लिए कपड़े का उपयोग किया जाता चित्रों के लिए सभी धात्विक और सीसा सफेद (चित्रों के बहुमत में पाया गया) ए टिन सफेदए और जस्ते का प्रयोग किया जाता था। लैम्ब्लैक ब्लैक ए ब्रिलिएंट येलोए जिसे इंडियन येलो (यूजेन्थिक एसिड का एक कैल्शियम या मैग्नीशियम नमक) कहा जाता हैए गोमूत्र से बनाए वनस्पति डाईस्टफ इंडिगो अधिक सामान्य नीला था। प्राकृतिक अल्ट्रामरीन (खनिज लैटराईट) का भी उपयोग किया गया था। सिंदूर (मरक्यूरिक सल्फाइड) और लाल सीसा ए लाल थे। कई सब्जियों के रंगों का भी उपयोग किया गया था। खारे पानी के साथ तांबे की धातु की प्रतिक्रिया से उत्पन्न होने वाला कॉपर क्लोराइड भी था। धातु के रंगद्रव्यों का भी प्रयोग किया जाता था जिसमें पाउडर के रूप में सोनाए और टिन धातु जो चांदी के रंग की थी का भी प्रयोग किया जाता था। इसमें चित्र के साथ इनकी पकड़ मजबूत करने के लिए बाइंडर्स भी प्रयुक्त किए जाते थे।

कोटा गढ़ भित्तिचित्रांकन

कोटा गढ़ में विभिन्न भित्तिचित्रों का अंकन हुआ है। यहां प्रमुख इमारतों का निर्माण विभिन्न शासकों के काल में समयान्तर से होता गया- झरोखाए बादल महलए राजमहलए अखाड़े का महलए आनंदमहलए लक्ष्मी भण्डार की तिवारीए अर्जुनमहलए भीममहलए बड़ामहलए छत्रमहलए अलसी बंगलाए चन्द्रमहलए जनानामहलए कंवरपदा की ड्योढीए झाला हवेली। इन इमारतों में से भित्तिचित्रांकन केवल कंवरपदा की ड्योढ़ीए राजमहलए अर्जुनमहलए लक्ष्मीभण्डार की तिवारीए बड़ामहलए छत्रमहल और झाला हवेली में ही हुआ है। कोटा गढ़ के बड़ा महल के चित्रों में मानवाकृतियों में मेवाड़ी और कोटा चित्रशैली की विशेषताएं यथा खंजन नेत्रोंए ऊंची भवेंए गर्वोन्नत भालए वस्त्रों पर अलंकरणए आकर्षक पृष्ठभूमि का चित्रांकन है। कई चित्रों में पृष्ठभूमि सपाट और रिक्त बनाई जाने लगी जो संभवतया मुगल प्रभाव को दृष्टिगोचर करती है। इस प्रकार के चित्र अर्जुन महलए लक्ष्मी भण्डार की तिवारी और कंवरपदा के महलों में परिलक्षित होते हैं। राव माधोसिंह के काल में निर्मित राजमहल जहां पर राजदरबार आयोजित किया जाता था। राजमहल के बाहर के बरामदे के मध्य के कक्ष और पीछे के कक्ष की दीवारों और छतों पर भित्तिचित्रों के साथ ही कांच की जड़ाई का काम किया गया। कांच की जड़ाई या मीनाकारी का प्रयोग मुगल कला का प्रभाव है।

मीनाकारी शब्द फारसी शब्द मीना या मीनू से लिया गया है जिसका अर्थ है 'स्वर्ग का नीला रंग'। मीनाकारी का आरंभ शाहजहां के काल से आरंभ हुआ। फूलोंए पत्तियोंए पक्षियों आदि के रूपांकनों में चमकीले रंगों के साथ विभिन्न प्रकार की धातुओं (सोनाए चांदीए अशुद्धए आदि) को अलंकृत करने और उन्हें लुभाने की कला को ही मीनाकारी कहा जाता

है। सुंदर तामचीनी टुकड़ों की दस्तकारी करने वाले कारीगरों को मिंकर के रूप में जाना जाता था। शाहजहां के काल में अंबर के राजा रामसिंह ने मीनाकारी को राजस्थान में प्रयोग किया। इसके लिए लाहौर से कुशल कारीगरों को भारत आमंत्रित किया गया और उन्होंने राजस्थान और विशेषतया मेवाड़ में दीवारोंए स्तभ्मों और छतों को सुंदर बनाने में इसका प्रयोग किया गया। मिंकर तब जयपुर चले गएए जहां उन्होंने बसना चुना और जयपुर अंततः इस पुराने शिल्प का घर बन गया। धीरे -धीरे इसकी लोकप्रियता के कारण मुगल हरम की बंगमों ने आभूषण निर्माण के लिए भी इस कला के प्रयोग को अनुमति प्रदान की । राजस्थान के बाद यह कला भारत के विभिन्न क्षेत्रों लखनऊए पंजाब और दिल्ली में भी प्रचलित होने लगी। आमेर किले और ग्वालियर किले की तरह किलों की दीवारों पर अपने सुंदर शिल्प का प्रदर्शन करने के लिए पूर्ववर्ती महाराजाओं द्वारा मिंकरों को नियुक्त किया गया था। प्रत्येक क्षेत्र के कलाकारों ने अपने स्वयं की विशेष शैली को शिल्प में जोड़ा और शीघ्र हीए प्रत्येक क्षेत्र में मीनाकारी कार्य की एक अनूठी विशेषता बन गई। उदयपुर और बीकानेर अपने चांदी के काम के लिए मीनाकारी किए जाने वाले क्षेत्रों के रूप में विकसित हुएए जबकि लखनऊ में यह नीले और हरे रंगों में प्रचलित हुई । बनारस में कारीगरों को कमल की आकृति और उसके साथ गुलाबी रंग अधिक पसंद आया। यह शैली 17वीं शताब्दी में भारत में आई थी और लखनऊ के अवध दरबार में काफी प्रचलित हुई। प्रतापगढ़ में मीनाकारी की ग्यास चित्रकारी काफी लोकप्रिय हुई। अपनी विशेषताओं के साथ यह सोने के साथ इस्तेमाल की जाने लगी। जयपुर में भी मीनाकारी का खासा प्रचलन हुआ। एनामलिंग उस पर विभिन्न खनिज पदार्थों के टुकड़ों को जोड़कर या फ्यूज करके धातु की सतह को रंगने या सजाने की कला है। एनामलिंग को सभी धातु सजावट का सबसे आकर्षक और तकनीकी माना जाता है। पूर्व में एनमेलिंग केवल सोने पर किया जाता थाए लेकिन वर्तमान में इसे अन्य धातुओं जैसे चांदीए तांबे आदि में किया जाता है।

छत्रमहल की भित्तियों पर भी वर्गाकार कॉलम्स में बार्डर पर और अन्य रिक्त स्थानों पर मीनाकारी दिखलाई देती है। छत्रमहल के विभिन्न कॉलम्स में कालिया दमनए चीरहरण ए राजमहल के भित्तिचित्रों यथा नृत्य एवं संगीतए रनिवास में रानीए रानी का श्रृंगार आदि के चित्रों में भी बार्डर पर मीनाकारी की गई है। इन चित्रों में राजपूती शैली और मुगल शैली का समन्वय दिखलाई देता है।

कोटा गढ़ में फ्रेस्को तकनीक के द्वारा भी चित्रों का अंकन किया गया। फ्रेस्को (बहुवचन फ्रेस्कोस या भित्तिचित्र) भित्ति चित्र की एक तकनीक है जिसे ताजी रखी (''गीली''द्ध चूने के प्लास्टर पर बनाया जाता है । पानी के साथ पाउडर वर्णक को घोलकर प्लास्टर के साथ वाहक के रूप में किया जाता हैए और प्लास्टर की स्थापना के साथए पेंटिंग भी दीवार का एक अभिन्न अंग बन जाता है। शब्द फ्रेस्को (इटालियन: एफ्रेस्को) इतालवी विशेषण फ्रेस्को शब्द ''फ्रेश'' से लिया गया है। यह भित्ति चित्र तकनीकए जो सूखे प्लास्टर

पर लागू होती हैए फ्रेस्को में पेंटिंग को पूरक करने के लिए प्रयोग की जाती है। फ्रेस्को तकनीक को प्राचीन काल से उपयोग में लाया गया है।

कोटा चित्रशैली की विशेषताएं छोटी कंचुकीए मेवाड़ी अलंकरणयुक्त वेशभूषा के साथ-साथ पारदर्शी ओढ़नी और लंहगे हैं। बड़ामहल के नृत्य चित्र में फर्श के चित्रण में मुगलकालीन छाप दिखलाई देती है वहीं राजा की पगड़ी पर भी मुगल प्रभाव है। स्त्रियों की वेशभूषा राजपूत शैली की है परन्तु पारदर्शी ओढ़नी मुगलकालीन प्रभाव दर्शाती है। राजमहल के अन्य चित्रों में भी स्त्रियों की वेशभूषा पर मुगलकालीन प्रभाव दिखलाई देता है। राजमहल के ही अन्य चित्रों में महाराव को राजपूती पोशाक में मुगलिया पगड़ी के साथ चित्रित किया गया है। महाराव रामसिंह की बग्घी की सवारी के चित्र में नर्तक दलों की वेशभूषा पर मुगलिया प्रभाव स्पष्ट दिखलाई देता है। मारवाड़ी और मुगल शैली की विशेषताएं लिए यह चित्र कुछ विशिष्ट दिखलाई देते हैं।

राजमहल के रनिवास के चित्र में रानी को चैपड़ खेलते हुए दिखलाया गया है। राजपूती और मुगल परिधान का समन्वय इस चित्र में दिखलाई देता है। रानी और दासियों की पारदर्शी ओढ़नी और कानों के झुमके आदि पर मुगल प्रभाव दिखलाई देता है। रत्नजड़ित आभूषणों का होना मुगल मीनाकारी की ओर संकेत करता है। लक्ष्मीभंडार की तिवारी में चित्रों में हाथियों की होली और घोड़ों की होली के दृश्यों में मेवाड़ीए बूंदीए कोटा और मुगल प्रभाव दिखलाई देते हैं। राजसी वेशभूषा में मुगल प्रभाव स्पष्ट अंकित है। महाराव के चित्र में आभामंडल का चित्रांकन भी किया गया है। छत्रमहल के ऊंटों की लड़ाई के चित्र में मुगल प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। वस्त्रों में पुरुष एक लंबा पारदर्शी जामाए एक लंबा और संकीर्ण पटकाए और चूड़ीदार पायजामा पहने हुए है। जूतियों पर भी मुगल प्रभाव दिखलाई देता है। कंवरपदा की ड्योढी के सिंह और जिराफ के शिकार के चित्र यद्यपि सेवक को मेवाड़ी वेशभूषा में चित्रित किया गया है। वहीं महाराव को पारदर्शी जामे और चूड़ीदार पायजामा पहने हुए दिखाया गया है।

अर्जुनमहल के दृश्य में हरी-भरी वनस्पतियों के बीच में महल के गवाक्षों से झांकते नायक-नायिकाओं का चित्रण है। इनमें कोटा चित्रशैली की विशेषता केले के कुंजों की भी बहुलता है। इस प्रकार मुगल प्रभाव होते हुए भी चित्रकार ने कोटा कलम को जीवित रखा है। अर्जुनमहल के चैगन्या और गजयुद्ध के चित्रों में भी मुगल पोशाकों की झलक दिखलाई देती है। पूर्वकालीन चित्रों जैसे कंवरपदा की ड्योढ़ी के महाराव रामसिंह की सवारी और बाड़े में सिंह का शिकार के चित्रों में कोटा कलम दृढ़ता से मुखरित हुई है किन्तु बाद में मुगल दरबार का आश्रय ग्रहण कर लेने के बाद मुगल प्रभाव चित्रों पर दिखलाई देने लगता है। इन चित्रों में कोटा चित्रशैली के अनुरूप प्राकृतिक रंगों के विभिन्न शेड्स का प्रयोग किया गया है जो कि कोटा शैली की एक विशेषता है।

छत्रमहल के कृष्णलीला के चित्रों और कंवरपदा की ड्योढी के छत अलंकरण में कोटा चित्रशैली मुगल प्रभाव से मुक्त देखी जा सकती है। इसमें बूंदी और मारवाड़ी शैली के अनुरूप छोटी कंचुकीए मेवाड़ी नीले-लाल लंहगेए कंुजश्लताओं का चित्रण है। दूसरी ओर कालिया दमन के चित्र में पारदर्शी लंहगे मुगल प्रभाव को दर्शाते हैं। अर्जुनमहल के माता और शिशु के चित्र में भी रानी की वेशभूषा पर मुगल प्रभाव होने के साथ-साथ उनके आभूषणों पर भी मुगल प्रभाव दिखलाई देता है। उनकी वेशभूषा में घाघराए एक बहुत ऊँची चोली और एक ओढ़नीए और काले रंग की लटकन उनकी कलाई और बाजुओं से जुड़ी होती है। इसके साथ ही पारदर्शी ओढ़नी और मीनाकारी के आभूषण मुगल प्रभाव स्पष्ट करते हैं।

कंवरपदा की ड्योढी के श्रीनाथ जी की पूजा के चित्र में तारों भरी रात का चित्रण मुगल प्रभाव दिखलाता है। अर्जुनमहल के ग्यारस की आरती एवं अन्नकूट के चित्रों में भी वेशभूषा पर मुगल प्रभाव चित्रित है। पुरुषों ने जामाए एक लंबा और संकीर्ण पटकाए और चूड़ीदार पायजामा पहना हुआ है। कई अमीरों ने मारवाड़ी पगड़ी तो कईयों ने खानजाई पगड़ी जो कि नुकीले शीर्ष से पहचानी जाती हैए पहनी हुई है। बड़ामहल के द्वाररक्षिका और नायिकाओं ने मेवाड़ी पोशाक धारण की हुई है लेकिन उनकी ओढ़नी मुगलिया प्रकार की है। उनके आभूषणों में भी मेवाड़ी और मुगल दोनों ही प्रभाव मिले-जुले रूप में देखने को मिलते हैं।

राजमहल के चित्र जिसमें कोटा के महारावों को चित्रित किया गया है यह भी मुगल प्रभाव लिए हुए हैं। आरंभ के महारावों को मेवाड़ी वेशभूषा में चित्रित किया गया है जबकि बाद के महारावों को मुगलिया वेशभूषा में चित्रित किया गया है। उनके पारदर्शी जामों ए चूड़ीदार पायजामों और पगड़ी के प्रकारों से उन्हें मेवाड़ी वेशभूषा से अलग रूप में पहचाना जा सकता है। यह चित्र पोर्टेट शैली में बनाए गए हैं जो कि मुगल प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। बड़ामहल के पोर्टेट चित्रों जिनमें राव किशोरसिंहए राव माधोसिंह को मुगल वेशभूषा में चित्रित किया गया है। मुगल प्रकार की पगड़ी ए पटका ए घेरदार पारदर्शी जामा और चूड़ीदार पायजामा पहने राव किशोरसिंह और दूसरी तरफ हाथ में ढाल लिए राव माधोसिंह की पगड़ी पर भी मुगल प्रभाव चित्रित किया गया है। मुगलों की तरह राव किशोरसिंह के चित्र में प्रभामंडल इन सम्राटों के एकल चित्र बनाए गए।

कोटा चित्रशैली की विशेषता शिकार के दृश्यों का अधिक चित्रांकन रहा है। हिरणए बाघए जंगली भैंसे के शिकार के दृश्यों में सेवकों और दासियों की वेशभूषा पर मारवाड़ी प्रभाव है लेकिन महाराव को मुगल वेशभूषा में चित्रित किया गया है। मुगल प्रभाव के फलस्वरूप चित्रों में फूलों की कतारों और बागों में फूलों को अधिकाधिक रूप से चित्रित किया जाने लगा था। इससे पूर्व के लघुचित्रों में मात्र वृक्षों के ऊपर कुछ फूलों और केले के कुंजों की बहुलता देखने को मिलती थी। महाराव रामसिंह के शिकार के दृश्य में मारवाड़ी शैली की

पोशाक पर मुगलिया पगड़ी और अलंकरणों में मुगल प्रभाव चित्रित किया गया है। कोटा शैली के अन्य चित्र में महाराव और रानी के अंतरंग पलों को चित्रित किया गया है। इस चित्र में महाराव मेवाड़ी वेशभूषा में चित्रित हैं । रानी को कोटा शैली के अनुरूप छोटी कंचुकी में चित्रित किया है लेकिन उनके घाघरे और ओढ़नी का पारदर्शी चित्रित किया जाना मुगल प्रभाव को दिखलाता है।

कोटा गढ़ के भित्तिचित्रों से मध्ययुगीन कोटा चित्रशैली की विशिष्टताओं के साथ ही कालान्तर में उस पर मेवाड़ीए दक्खनी और मुगलकालीन शैलियों को देखा जा सकता है। विभिन्न महारावों के शासनकाल में यहां लघु भित्तिचित्र बनवाए जाते रहे।

ज्ञमल ॅवतके

फ्रेस्को - भित्ति चित्र की एक तकनीक है जिसे ताजी रखी (''गीली''द्ध चूने के प्लास्टर पर बनाया जाता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सक्सेना अनिल-मुग़ल कल्चरए अनमोल पब्लिकेशन
2. वर्मा बद्रीनारायण- कोटा भित्तिचित्रांकन परम्पराए राधा पब्लिकेशनए नई दिल्लीए 1989
3. नीरज जयसिंह एवं शर्मा भगवती लाल-राजस्थान की सांस्कृतिक परम्पराएराजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमीए जयपुर
4. कुमावत हेमलता-बूंदी स्थापत्य एवं चित्रकलाएराज पब्लिकेशन हाउसए जयपुर
5. मारवाल श्वेता- कोटा गढ़ के भित्तिचित्रों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन ए पी.एच.डी. थीसिस कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा 2000